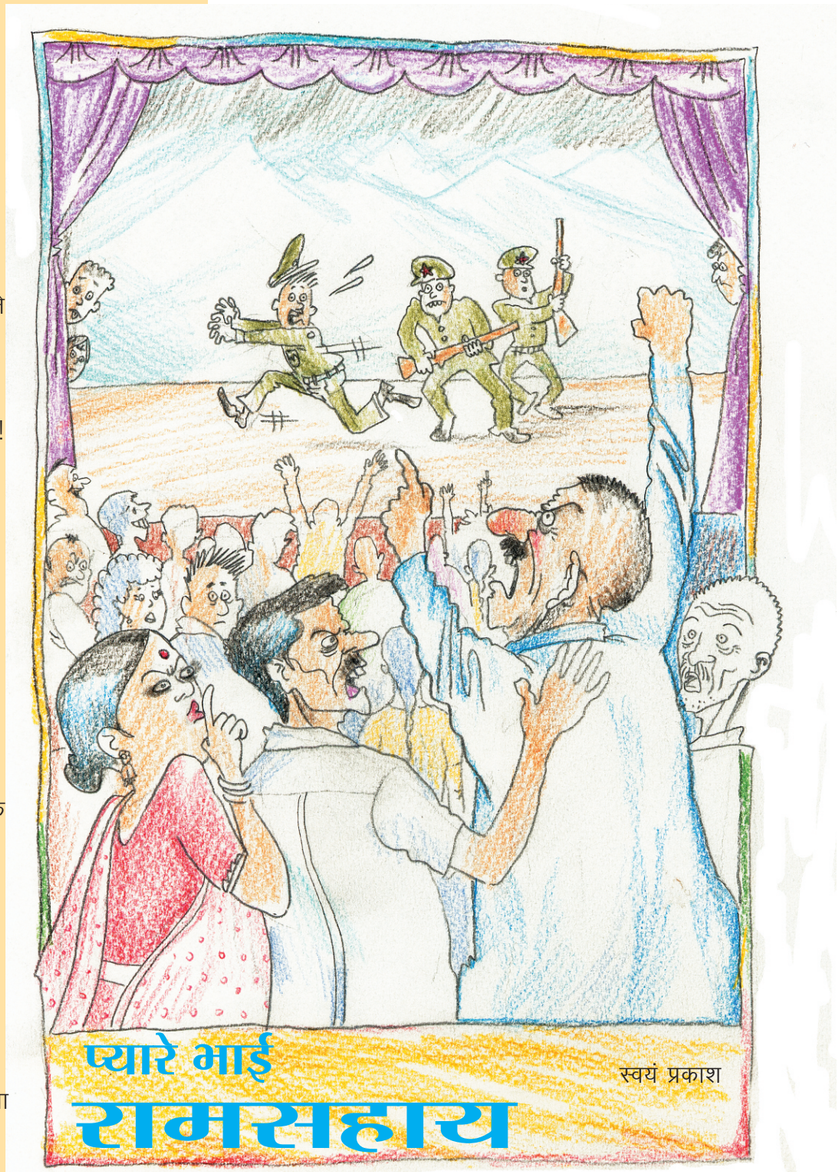

प्यारे भाई रामसहाय

स्वयं प्रकाश

गणेश चतुर्थी से अनन्त चतुर्दशी तक गली-गली में साँस्कृतिक कार्यक्रम होते थे। वादविवाद, आशुभाषण, फेन्सी ड्रेस और गायन स्पर्धा से लेकर नाटक तक। हम हर रोज़ आसपास के दस-बारह मोहल्लों के कार्यक्रम देखकर आते और सुबह एक-दूसरे को बताते थे। एक बार राधेश्याम ने कहा कि हर मोहल्ले में कार्यक्रम होते हैं, सिर्फ हमारे यहाँ कुछ नहीं होता। क्यों न इस बार हम लोग मिलकर अपने मोहल्ले में कुछ करें! राधेश्याम का प्रस्ताव सबको इतना पसन्द आया कि बस! कागज़-पेन लाने की देर थी, आनन-फानन में गणेश उत्सव समिति का गठन हो गया। दसों दिन का कार्यक्रम बन गया। गणपति कहाँ बैठेंगे, कब कौन-सी प्रतियोगिता होगी, कौन-कौन निर्णायक होंगे, पुरस्कार क्या दिए जाएँगे आदि। इस बात पर काफी विवाद हुआ कि अन्त में पुरस्कार वितरण किससे करवाया जाए। आधे बच्चों का कहना था कि मोहल्ले के सबसे बुज़ुर्ग व्यक्ति से पुरस्कार वितरण करवाया जाए तो आधों का विचार था कि जो सबसे ज़्यादा चन्दा दे उसी से पुरस्कार वितरण करवाया जाए।

दूसरे ही दिन से घर-घर जाकर चन्दा माँगने का कार्यक्रम चालू हो गया। चूँकि मोहल्ले में पहली बार गणेशोत्सव का आयोजन हो रहा था और इसमें सभी घरों के बच्चे शामिल थे, इसलिए सबने खुशी-खुशी चन्दा दिया – चार आने से एक रुपए तक। लेकिन आर्यावर्त होटल से राधेश्याम दस रुपए से कम लेने पर राज़ी नहीं हुआ – जो अन्ततः उन्होंने दे भी दिए। इसी से तय हो गया कि आर्यावर्त होटल के "महाराज" ही पुरस्कार देंगे। लेकिन जब यह बात अशोक के पापा कुटुम्बेले वकील को मालूम पड़ी तो उन्होंने सीधे पच्चीस रुपए दे दिए ताकि पुरस्कार वितरित करने का गौरव उनसे कोई छीन न सके। जबकि पहले वह किसी भी हालत में आठ आने से ज़्यादा देने को तैयार नहीं हो रहे थे।

कुल मिलाकर हमारी उम्मीद से ज़्यादा चन्दा आ गया और तैयारियाँ शुरू हो गईं। कार्यक्रम के अनुसार आठवें रोज़ एक नाटक भी रखा गया था। अब नाटक की खोज शुरू हुई – लाइब्रेरियाँ खँगाली गईं। लेकिन कोई नाटक पसन्द नहीं आया। किसी में ढेर सारे दृश्य, किसी में एकदम किताबी भाषा और किसी में स्त्री पात्र! परेशान हो गए। अन्त में तय हुआ कि नाटक हम खुद लिखेंगे। और कई रातों की मेहनत के बाद नाटक हमने लिख भी लिया। नाटक का नाम था – "झण्डा ऊँचा रहे हमारा"। इसमें भारत-चीन युद्ध का एक मार्मिक प्रसंग था जिसमें एक अकेला भारतीय सैनिक चीनी सैनिकों की पूरी टुकड़ी को ठिकाने लगा देता है।

कार्बन पेपर लगा-लगाकर नाटक की कॉपियाँ बनाई गईं और रिहर्सल शुरू हुई। एक-दो बच्चों को सीटी बजाकर और मुँह से तरह-तरह की आवाज़ें निकालकर युद्ध का वातावरण पैदा करना सिखाया गया। चपटी नाक वाले बन्डू को चीनी कैप्टन चूँग-चाँग का रोल मिला और राजा को भारतीय मेजर का। राजा को हमारे बाड़े का सबसे बढ़िया अभिनेता माना जाता था। वह फिल्मी अभिनेताओं की बड़ी अच्छी नकल उतारता था। वो स्कूल के ड्रामे में भी कोई रोल कर चुका था। लेकिन उसने कहा कि मेरे पापा मुझे करने नहीं देंगे क्योंकि पिछले साल मैं फेल हो गया था। इसलिए मैं केवल इस शर्त पर कर सकता हूँ कि मेरे पापा को पता नहीं चले।

अब समस्या थी वर्दी की। तो भारतीय सैनिकों की वर्दी में कोई चक्कर नहीं था। स्काउट और एनसीसी की वर्दी तो थी ही। लकड़ी की बन्दूकें हमने खुद बना ली थीं और टोपियाँ एक कबाड़ी से किराए पर मिल गई थीं। लेकिन चीनी वर्दी समस्या थी। खासकर चीन कप्तान की। अन्त में राधेश्याम उसके लिए एक होटल के ड्रायवर की वर्दी-टोपी ले आया।

इधर-उधर से चौकी-तखत-मेज़ वगैरह जुगाड़कर स्टेज बना दिया गया। लिमये अंकल के घर से तार खींचकर लाइट लगा ली। इधर-उधर से चादर माँग ली तो परदे बन गए। एक पेन्टर का असिस्टेंट मज्जू का दोस्त था। वह सिर्फ नील और खड़िया से पीछे की दीवार पर बड़ा सुन्दर हिमालय बना गया। हम लोगों के हाथ में पहली बार इतना पैसा आया था इसलिए हम न केवल अच्छे-अच्छे पुरस्कार खरीद लाए – जो घूम-फिरकर हमें ही मिलने थे – बल्कि हमने रिहर्सल के दौरान चने-मुरमुरे के नाश्ते भी खूब उड़ाए।

चूँकि सभी घरों के बच्चे नाटक में रोल कर रहे थे इसलिए नाटक को लेकर सबमें घोर उत्सुकता थी। नाटक की रिहर्सल छिपकर होती थी और अभिनेताओं को सख्त हिदायत थी कि शो से पहले नाटक के बारे में किसी को कुछ न बताएँ – घरवालों को भी नहीं।

नाटक तैयार था लेकिन चीनी कप्तान की वर्दी नाटक से कुछ देर पहले ही आई। सफेद झक्क और कलफदार साथ ही चमचमाती हुई छज्जेदार टोपी भी। तभी एक हिन्दुस्तानी सैनिक नन्दकिशोर मचल गया कि मुझे चीनी कप्तान का रोल दो वरना सम्हालो अपना नाटक, मैं चला। और वह चला भी गया। तब सारे कलाकारों को दौड़ाया गया कि मेकप-शेकप छोड़ो और नन्दकिशोर जहाँ भी हो, उसे ढूँढकर लाओ! बड़ी मुश्किल से नन्दकिशोर पकड़ में आया और बहुत हाथ-जोड़ी करवाने के बाद नाटक करने को राज़ी हुआ। किसी तरह नाटक शुरू हुआ।

अशोक एक भारतीय सैनिक का रोल कर रहा था। उसे जोश भरे लहज़े में एक डॉयलॉग बोलना था – "जंग के मैदान से भागना कायरों का काम है।" इसे वह हमेशा ऐसे बोलता था – "जंग के मैदान से भागना घायलों का काम है।" वह फाइनल शो में भी ऐसे ही बोला। दर्शक हँसते-हँसते लोटपोट हो गए।

राजा के पापा पुराने ज़माने के पिताजियों की तरह थे – भीतर से मक्खन लेकिन बाहर से फौलाद दिखने की कोशिश करने वाले। उन्हें खबर सब थी पर ज़ाहिर नहीं कर रहे थे। फाइनल शो के दिन सबके आने के बाद वे भी चुपके से आए और खचाखच भीड़ में पीछे ही पीछे खड़े होकर नाटक देखने लगे। दृश्य यह था कि चीनी सैनिकों ने भारतीय मेजर को पकड़ रखा है और चीनी कप्तान उसे बन्दूक की बट से मार रहा है। भारतीय मेजर बने राजा ने मार खाने और तड़पने का ऐसा सजीव अभिनय किया कि दर्शकों की आँखें भर आईं। तभी भीड़ में पीछे खड़े राजा के पापा चीखे, "अबे मार! दूध नहीं पीता क्या? अपने से आधी उमर के बन्डू से मार खा रहा है! दे! दे साले को उठाके! मार! तू भी मार!"

दर्शक कुछ समझ नहीं पाए और मुड़कर पीछे देखने लगे। अभिनेता सन्न! और राजा ने क्या किया? राजा टोपी फेंककर भागा, स्टेज से कूदा... और उसके पीछे-पीछे "भारतीय सैनिक" और "चीनी सैनिक" भागे... राजा सुन... राजा रुक जा... तेरे पापा तुझे मारने नहीं, ईनाम देने आए हैं... राजा!!

बाहर निकलने का दरवाज़ा किसी ने बन्द कर दिया था। आगे-आगे राजा और पीछे-पीछे चीनी और भारतीय सैनिक भीड़ के चारों तरफ भाग रहे थे... और दर्शकों का हँसते-हँसते बुरा हाल हो रहा था।

माथापच्ची का हल

1. क्योंकि किसी ने भी अपने नाम के रंग के कपड़े नहीं पहने हैं इसलिए मिस्टर ग्रीन या तो लाल या फिर सफेद रंग के कपड़े पहन सकते हैं। चूँकि मिस्टर ग्रीन जिससे बात कर रहें हैं उसने सफेद रंग के कपड़े पहने हैं। इसलिए मिस्टर ग्रीन केवल लाल रंग ही पहन सकते हैं। मिस्टर व्हाइट केवल हरा और लाल रंग पहन सकते हैं लेकिन लाल रंग मिस्टर ग्रीन ने पहना है इसलिए मिस्टर व्हाइट ने हरा और मिस्टर रेड ने सफेद रंग पहना है। **2.** परिवार में 5 ही लोग हैं। नानी, माँ और उनकी चार बेटियाँ। **3.** 2। चूँकि हर पंक्ति का जोड़ ऊपर वाली पंक्ति के जोड़ से एक अधिक है। **4.** आज 1 जनवरी है। कल 31 दिसम्बर था यानी जिया का आठवाँ जन्मदिन। एक दिन पहले यानी 30 दिसम्बर तक वह 7 साल की थी। इस साल वह 9 साल की हो जाएगी और अगले साल 10 की।